**डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागे**
एम्·ए·पीएच्·डी·
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई,
जि·सातारा (महाराष्ट्र)

## प्रमाणपत्र

मैं डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, किसन वीर महाविद्यालय, वाई, जि·सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि, सौ·स्नेहल इंद्रसेन यादव (सोळस्कर) ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल्·(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध **"मोहन राकेश के नाटकों में ऐतिहासिकता, यथार्थता, मनोवैज्ञानिकता"** मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं सौ·स्नेहल इंद्रसेन यादव (सोळस्कर) के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

वाई
दिनांक : 21/12/14

हस्ताक्षर
डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागे
निर्देशक

## अ नु शं सा

हम अनुशंसा करते हैं कि सौ·स्नेहल इंद्रसेन यादव (सोळस्कर) का एम्·फिल· (हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध "मोहन राकेश के नाटकों में ऐतिहासिकता, यथार्थता, मनोवैज्ञानिकता परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

28/12/1995

डॉ·गजानन शंकर सुर्वे
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

L.B.S. College Satara

प्राचार्य पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

## प्र स्या प न

मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मेरे संशोधन का विषय "**मोहन राकेश के नाटकों में ऐतिहासिकता, यथार्थता और मनोवैज्ञानिकता**" सर्वथा मौलिक है। इसके प्रस्तुतिकरण के पहले इस या अन्य विश्वविद्यालय में किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

वाई

दिनांक : 30 दिसम्बर 1995

सौ. स्नेहल इंद्रसेन यादव (सोळस्कर)
1185, रामडोह आळी,
वाई, जि. सातारा.

# भू मि का

साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक साहित्य जीवन के सबसे ज्यादा समीप है। नाट्य-साहित्य सही अर्थ में मानव के द्वारा मानव के विचार की अभिव्यक्ति है। नाटक ने इतिहास से यथार्थ तक सभी युगों को एकसाथ समेट लिया है। नाटक व्यक्ति के जीवन का सही-सही अर्थ में प्रतिबिम्ब है।

मोहन राकेश के नाटक जीवन के निकट रहे हैं। व्यक्ति जो कुछ देखता है ग्रहण करता है और जिन परिस्थितियों से गुजरता है उन सभी कृतियों का लेखा-जोखा मोहन राकेश के नाटकों में मिलता है।

मोहन राकेश का मुख्य लक्ष्य रहा है महानगर में जीवन व्यतीत करने वाला मध्यमवर्ग। मोहन राकेश ने यथार्थ परक और आत्म परक दृष्टिकोण से व्यक्ति के संबंध और जटिलता को व्यक्त किया है। राकेश ने अपने नाटक साहित्य में कवि मन से हमारे आसपास रहने वाले आधुनिक व्यक्ति तक का सफर अपने साहित्य द्वारा किया है और मन की गुत्थियाँ खोलने का प्रयास किया है। आपके लेखन में कथावस्तु से भाषाशैली तक सभी प्रभावी तत्वों ने मुझे अध्ययन के लिए प्रेरणा दी है। मैंने आपके नाट्य-साहित्य में ऐतिहासिकता, यथार्थता, मनोवैज्ञानिकता तथा रंगमंचीयता के नये आयामों को खोजने का प्रयत्न किया है।

मैंने यह शोध-प्रबंध मेरे गुरूवर्य श्रीयुत डॉ.व्यंकटेश वामन कोटबागे की प्रेरणा और मार्गदर्शन में पूरा किया है। डॉ.कोटबागेजी मेरे पूरे शिक्षा काल में मेरे अध्यापक रहे हैं। आपके समय-समय पर मार्गदर्शन और प्रेरणा के कारण मैंने आज हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट नाटककार के साहित्य पर अपने विचार

प्रकट करने का प्रयत्न किया है। मैं अपने गुरू के चरणों पर नतमस्तक हूँ। हृदय से ऋणी हूँ।

डॉ॰ वसंत मोरेजी, भूतपूर्व हिन्दी विभाग अध्यक्ष, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, डॉ॰ गजानन सुर्वेजी, रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, श्री जयवंत जाधवजी, प्राध्यापक हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, प्रा॰ डॉ॰ शिवाजीराव निकमजी, छ॰शिवाजी कॉलेज, निवृत्त प्राचार्य श्री॰ अमरसिंह राणेजी और वर्तमान प्राचार्य श्री॰ पुरूषोत्तम सेठजी, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा की मैं आभारी हूँ, जिनकी मुझे हमेशा सहायता रही है।

मैं उन विद्वान लेखकों और समीक्षकों की कृतज्ञ हूँ जिनके ग्रन्थ यह लघु-शोध-प्रबंध तैयार करने में सहायक हुए हैं। अन्त में यह लघु-शोध-प्रबंध अत्यंत कम समय में टंकन-लेखन करने वाले "**रितेश सायक्लोस्टायलिंग, सातारा**" के श्री॰ मुकुन्द ढवलेजी, सुशीलकुमार कांबलेजी तथा राजू कुलकर्णीजी के प्रति कृतज्ञ हूँ।

वाई

दिसम्बर 1995

सौ॰ स्नेहल इंद्रसेन यादव (सोळस्कर)